Shaane Rafaai (Hindi)

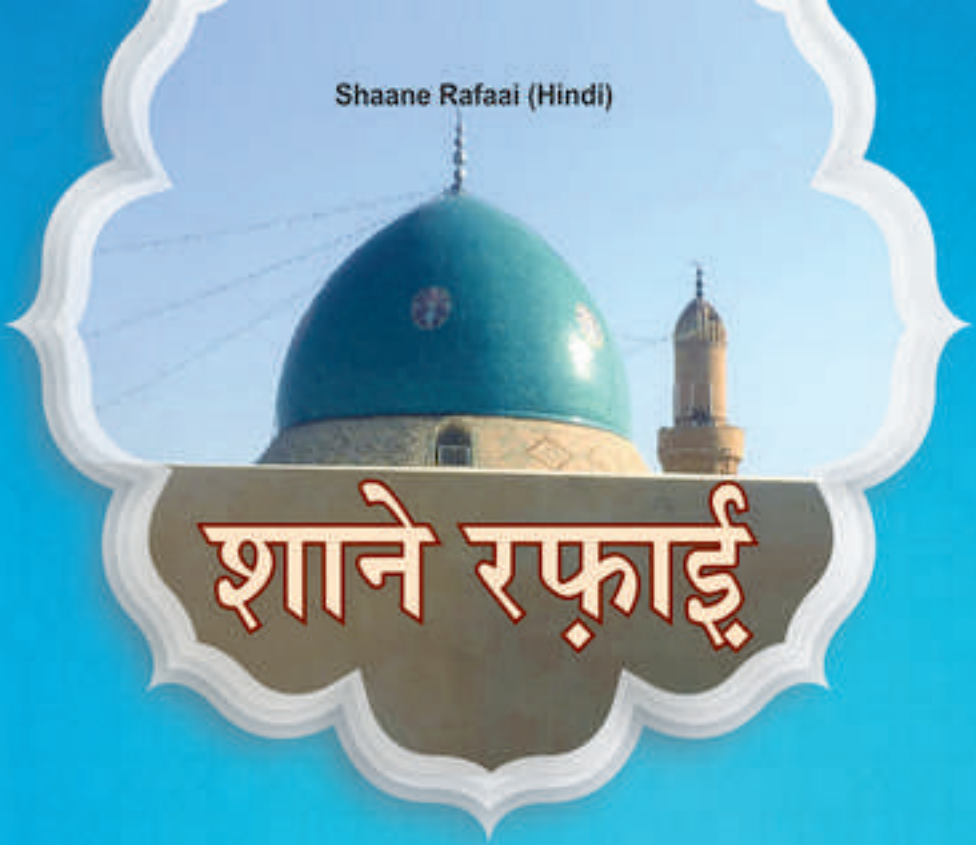

शाने रफ़ाई

सात औलियाए किराम की सात ख़ुश ख़बरियां 01

बच्चों पर शफ़्क़त 07

इमाम रफ़ाई और औलियाए उम्मत 12

मल्फ़ूज़ाते अहमद कबीर रफ़ाई 15

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افۡتَحۡ عَلَيۡنَا حِكۡمَتَكَ وَانۡشُرۡ
عَلَيۡنَا رَحۡمَتَكَ يَا ذَا الۡجَلَالِ وَالۡاِكۡرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**शाने रफ़ाई**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

शाने रफ़ाई

दुआए अ़त्तार

या अल्लाह पाक ! जो कोई 17 सफ़्हात का रिसाला "शाने रफ़ाई" पढ़ या सुन ले उस को इमाम अह़मद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का फ़ैज़ान नसीब फ़रमा और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह करीम के आख़िरी नबी صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक तुम्हारे नाम मअ़ शनाख़्त मुझ पर पेश किये जाते हैं लिहाज़ा मुझ पर अह़सन (या'नी ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ में) दुरूदे पाक पढ़ो ।"

(مصنّف عبد الرزّاق ج۲ص۱۴۰حدیث۳۱۱۶، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

सात औलियाए किराम की सात ख़ुश ख़बरियां

एक छोटा और प्यारा सा बच्चा **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों के क़रीब से गुज़रा तो वोह बुज़ुर्ग उस बच्चे को देखने लगे । उन में से एक ने कलिमए त़य्यिबा لَا اِلٰهَ اِلَّا الله مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ الله पढ़ा और कहने लगे : वोह बा बरकत दरख़्त ज़ाहिर हो चुका है, दूसरे ने फ़रमाया : उस दरख़्त से कई शाख़ें (Branches) निकलेंगी, तीसरे ने कहा : कुछ अ़र्से में इस दरख़्त का साया (Shade) त़वील हो जाएगा, चौथे ने फ़रमाया : कुछ अ़र्से में इस का फल ज़ियादा होगा और चांद चमक उठेगा, पांचवें ने फ़रमाया : कुछ अ़र्से बा'द लोग इन से करामात का ज़ुहूर देखेंगे और बहुत ज़ियादा

इन की जानिब माइल होंगे, छठे ने फ़रमाया : कुछ ही अ़र्से बा'द इन की शानो अ़ज़मत बुलन्द हो जाएगी और निशानियां ज़ाहिर हो जाएंगी, सातवें ने फ़रमाया : न जाने (बुराई के) कितने दरवाज़े इन की वज्ह से बन्द हो जाएंगे ? और बहुत से लोग इन के मुरीद होंगे।

(جامع کرامات الاولیاء ج۱ ص۴۹۰، مرکز اہل سنت برکات رضا ہند)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक का करोड़हा करोड़ एह़सान है जिस ने हमारे दिलों में औलियाए किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم की मह़ब्बत पैदा फ़रमाई है अभी जिस नेक और बा करामत बच्चे का ज़िक्र हुवा येह कोई और नहीं बल्कि सिल्सिलए रफ़ाइय्या के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़्युद्दीन सय्यिद अबुल अ़ब्बास अह़मद कबीर रफ़ाई हुसैनी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه थे। आप नवासए रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम हुसेन رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه की औलाद में से हैं।

(सीरते सुल्त़ानुल औलिया, स. 22, मुल्तक़त़न, वग़ैरा, الزاویۃ الرفاعیہ)

आइये ! हुसूले बरकत के लिये इन का ज़िक्रे ख़ैर सुनते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : عِنْدَ ذِكْرِ الصّٰلِحِيْنَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है। (حلیۃ الاولیاء ج۷ ص۳۳۵ رقم ۱۰۷۵۰، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ख़ुश ख़बरी

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की पैदाइश से 40 दिन पहले आप के मामूं ह़ज़रते सय्यिद मन्सूर बत़ाइही رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को ख़्वाब में **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार हुवा, देखा कि मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमा रहे हैं : ऐ मन्सूर ! 40 दिन बा'द तेरी बहन के हां एक लड़का पैदा होगा उस का नाम अह़मद रखना और जब वोह कुछ समझदार हो जाए तो उसे ता'लीम के लिये शैख़ अबुल फ़ज़्ल अ़ली

क़ारी वासिती़ के पास भेज देना और उस की तरबियत से हरगिज़ ग़फ़्लत न बरत्ना । इस ख़्वाब के पूरे 40 दिन बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की विलादत हो गई ।

(طبقات الصوفية للمناوی ج ۴ ص ۱۹۱، دار صادر، بیروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मामूंजान के ज़ेरे तरबियत

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने सात साल की उ़म्र में क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ (या'नी ज़बानी याद) किया, इसी साल आप के अब्बूजान किसी काम के सिल्सिले में बग़्दाद तशरीफ़ ले गए और वहीं उन का इन्तिक़ाल हो गया । अब्बूजान के इन्तिक़ाल के बा'द आप के मामूंजान शैख़ मन्सूर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने आप और आप की अम्मीजान को अपने पास बुला लिया ताकि अपनी सर परस्ती में आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ज़ाहिरी व बाति़नी ता'लीमो तरबियत का सिल्सिला जारी रख सकें, क़ुरआने पाक तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه पहले ही ह़िफ़्ज़ कर चुके थे लिहाज़ा कुछ दिनों बा'द ह़ज़रते शैख़ मन्सूर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्मे पाक के मुता़बिक़ वासित़ में ह़ज़रते शैख़ अ़ली क़ारी वासिती़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये आप को भेज दिया, शैख़ अ़ली क़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने आप की ता'लीमो तरबियत पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी । उस्ताद साह़िब की भरपूर शफ़्क़त और अपनी ख़ुदादाद सलाह़िय्यत के नतीजे में सय्यिद अह़मद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने सिर्फ़ 20 साल की उ़म्र में ही तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह, मआ़नी, मन्तिक़ व फ़ल्सफ़ा और तमाम मुरव्वजा उ़लूमे ज़ाहिरी ह़ासिल कर लिये और साथ ही अपने मामूंजान शैख़ मन्सूर बताइ़ही رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से उ़लूमे बाति़नी भी ह़ासिल करने लगे, **अल्लाह** पाक की

रह़मत से आप ने बात़िनी उ़लूम में भी बहुत जल्द कमाल ह़ासिल कर लिया। (सीरते सुल्त़ानुल औलिया, स. 45 ता 46 मुलख़्ख़सन, वग़ैरा)

सज्जादा नशीनी का वाक़िआ़

जब ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मन्सूर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो इन की ज़ौजए मोह़तरमा ने अ़र्ज़ की : अपने बेटे के लिये ख़िलाफ़त की वसिय्यत कर दें, शैख़ मन्सूर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : नहीं बल्कि मेरे भान्जे अह़मद के लिये ख़िलाफ़त की वसिय्यत है, ज़ौजए मोह़तरमा ने जब इसरार किया तो आप ने अपने बेटे और भान्जे इमाम रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को बुलवाया और दोनों से फ़रमाया : मेरे पास खजूर के पत्ते लाओ, बेटा तो बहुत से पत्ते काट कर ले आया मगर सय्यिदुना इमाम रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه कोई पत्ता न लाए, वज्ह पूछी तो ह़िक्मत से भरपूर जवाब देते हुए अ़र्ज़ की : मैं ने सब को **अल्लाह** की तस्बीह़ करते हुए पाया, इसी लिये किसी पत्ते को नहीं काटा, जवाब सुन कर शैख़ मनसूर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपनी ज़ौजए मोह़तरमा की त़रफ़ मुस्कुरा कर देखा और फ़रमाया : "मैं ने भी कई मर्तबा येही दुआ़ की थी कि मेरा ख़लीफ़ा मेरा बेटा हो मगर मुझ से हर मर्तबा येही फ़रमाया गया कि तुम्हारा ख़लीफ़ा तुम्हारा भान्जा है।" लिहाज़ा 28 साल की उ़म्र में सय्यिद अह़मद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को मामूंजान की त़रफ़ से ख़िलाफ़त अ़त़ा हुई और उसी साल शैख़ मन्सूर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल हो गया। (بهجة الاسرار، ص ۲۷۰ وغیرہ، دار الکتب العلمیہ)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

नवाफ़िल की कसरत

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه रोज़ाना चार सो रक्आ़त नवाफ़िल पढ़ा करते जिन में एक हज़ार मर्तबा सूरतुल इख़्लास पढ़ते नीज़ रोज़ाना दो हज़ार मर्तबा इस्तिग़्फ़ार भी करते। (طبقات الصوفیۃ ج۲ ص۲۲۵)

इबादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी करम हो करम या ख़ुदा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मख़्लूक़े ख़ुदा पर शफ़्क़त

जब आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه धूप में चल रहे होते और कोई टिड्डी आप के कपड़ों में सायादार जगह पर बैठ जाती तो जब तक उड़ न जाती आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه उसी जगह ठहरे रहते और फ़रमाते : इस ने हम से साया ह़ासिल किया है। (طبقاتِ کبریٰ للشعرانی جزء ا ص ۲۰۰، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

कुत्ते पर रह़्म

एक मर्तबा आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक ख़ारिश ज़दा कुत्ते को देखा जिसे बस्ती वालों ने बाहर निकाल दिया था, आप उसे जंगल में ले गए और उस पर साएबान (या'नी बारिश और धूप से बचाने के लिये छप्पर) बनाया नीज़ उसे खिलाते पिलाते और हर त़रह़ से उस का ख़याल रखते रहे ह़त्ता कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की भरपूर तवज्जोह के नतीजे में जब वोह तन्दुरुस्त हो गया तो आप ने उसे गर्म पानी से नहला कर साफ़ सुथरा कर दिया। (طبقاتِ کبریٰ للشعرانی جزء ا ص ۲۰۰)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इस मुबारक अन्दाज़ में हमारे लिये बेहतरीन सबक़ है, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि इन्सान तो इन्सान जानवरों से भी बद सुलूकी न करें और इन के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आएं क्या ख़बर हमारा येही अ़मल **अल्लाह** पाक की बारगाह में क़बूल हो जाए और हमारी मग़्फ़िरत व बख़्शिश का ज़रीआ़ बन जाए।

अल्लाह करीम के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : एक फ़ाह़िशा (या'नी बदकार) औ़रत की सिर्फ़ इस लिये मग़्फ़िरत फ़रमा दी गई कि उस का गुज़र एक कुत्ते के पास से हुवा जो कूंएं की मुंडेर (Well Parapet)

के पास प्यास के मारे हांप रहा था, क़रीब था कि शिद्दते प्यास से मर जाता। उस औ़रत ने अपना मोज़ा उतार कर दोपट्टे से बांधा और पानी निकाल कर उसे पिलाया तो येही अ़मल उस की बख़्शिश का सबब हो गया।

(بخاری ج۲ص۴۰۹حدیث۳۳۲۱،دارالکتب العلمیۃ بیروت)

कोढ़ियों और अपाहजों की ख़िदमत

हज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद कबीर रफ़ाई رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का येह भी मा'मूल शरीफ़ था कि मरीज़ों और अपाहजों (पाउं से मा'ज़ूर अफ़राद) के पास जाते और उन से हमदर्दी भरा सुलूक करते, उन के कपड़े धोते, उन के सर और दाढ़ी से मैल साफ़ करते, उन के पास खाना ले जाते उन के साथ मिल कर खाते और बत़ौरे आ़जिज़ी उन से दुआ़एं करवाते, जब आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ गाउं के किसी शख़्स की बीमारी का सुनते तो उस के पास जा कर उस की इ़यादत करते अगर्चे रास्ता कितना ही दूर क्यूं न होता और (कभी कभार) जाने आने में एक दो दिन लग जाते, कभी यूं भी होता कि आप रास्तों पर खड़े हो कर नाबीनाओं का इन्तिज़ार करते अगर कोई मिल जाता तो हाथ पकड़ कर उन्हें मन्ज़िल तक पहुंचा दिया करते।

(طبقاتِ کبریٰ للشعرانی، جزء۱ص۲۰۰بتغیر)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़रीबों और बीमारों की मदद करना बहुत बड़े सवाब का काम है, **अल्लाह** पाक तौफ़ीक़ दे तो हमें अपने अत़राफ़ में रहने वाले आ़शिक़ाने रसूल मुसल्मान पड़ोसियों वग़ैरा के दुख दर्द में काम आना चाहिये। **अल्लाह** पाक के रह़मत वाले नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो किसी मुसल्मान से दुन्या की तक्लीफ़ों में से एक तकलीफ़ को दूर कर दे **अल्लाह** पाक उस की क़ियामत के दिन की तक्लीफ़ों में से एक तक्लीफ़ को दूर फ़रमा देगा और जो किसी तंगदस्त पर दुन्या में आसानी कर दे **अल्लाह** पाक दुन्या व आख़िरत में उस पर आसानी फ़रमा देगा और जो किसी मुसल्मान की दुन्या में पर्दा पोशी

करेगा **अल्लाह** करीम उस की दुन्या व आख़िरत में पर्दा पोशी फ़रमाएगा और **अल्लाह** पाक बन्दे की मदद में रहता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में रहता है। (ترمذی ج۳ص۳۷۳حدیث۱۹۳۷)

हमेशा हाथ भलाई के वासिते उठें बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब
रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम करें न रुख़ मेरे पाउं गुनाह का या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बच्चों पर शफ़्क़त

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक के नेक बन्दे किसी का दिल नहीं दुखाते चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का गुज़र एक मर्तबा चन्द बच्चों के पास से हुवा जो खेल रहे थे, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को देखा तो वोह हैबत (या'नी रो'ब) की वज्ह से भाग गए, आप उन के पीछे गए और फ़रमाया : मेरी वज्ह से तुम हैबत (Fear) में मुब्तला हुए लिहाज़ा मुझे मुआ़फ़ कर दो और अपना खेल जारी रखो। (طبقاتِ کبریٰ للشعرانی جزء۱ص۲۰۰)

मेरे अख़्लाक़ अच्छे हों मेरे सब काम अच्छे हों
बना दो मुझ को तुम पाबन्दे सुन्नत या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश, स. 186, मक्तबतुल मदीना)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

उ़म्र रसीदा लोगों पर शफ़्क़त

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जब किसी बड़ी उ़म्र के शख़्स को देखते तो उस के मह़ल्ले वालों के पास जाते और उन्हें समझाते हुए येह ह़दीसे पाक सुनाते कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो बूढ़े मुसल्मान की इ़ज़्ज़त करता है **अल्लाह** पाक उस के बुढ़ापे के वक़्त किसी और को उस की इ़ज़्ज़त करने पर मुक़र्रर फ़रमा देता है।

(طبقاتِ کبریٰ للشعرانی جزء۱ص۲۰۰، ترمذی ج۳ص۴۱۱حدیث۲۰۲۹، دار الفکر بیروت)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : जो शख़्स बूढ़े मुसल्मान का सिर्फ़ इस लिये एह़तिराम करे कि इस की उ़म्र ज़ियादा है, इस की इ़बादात मुझ से ज़ियादा हैं, येह मुझ से पुराने इस्लाम वाला है तो اِنۡ شَآءَاللّٰہ दुन्या में वोह देख लेगा कि उस के बुढ़ापे के वक़्त लोग उस का एह़तिराम करेंगे। इस वा'दे में फ़रमाया गया कि ऐसा आदमी दराज़ उ़म्र (या'नी लम्बी उ़म्र) भी पाएगा, दुन्या में माल, ऐ़श, इ़ज़्ज़त भी उसे मिलेगी आख़िरत का अज्र इस के इ़लावा है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 560, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़)

मिस्कीनों और बेवाओं की दादरसी

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ सफ़र से वापसी पर जब अपनी बस्ती के क़रीब पहुंचते तो सामान बांधने वाली रस्सी निकाल लेते और लकड़ियां जम्अ़ कर के अपने सर पर रख लेते आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की देखा देखी दीगर फ़ुक़रा भी ऐसा ही करते और शह़र में दाख़िल हो कर बेवाओं, मिस्कीनों अपाहजों, बीमारों, नाबीनाओं और बूढ़ों में वोह तमाम लकड़ियां तक़्सीम कर देते, आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ कभी भी बुराई का बदला बुराई से न देते।

(طبقاتِ کبریٰ للشعرانی جزء ۱ ص ۲۰۰)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہِم का त़र्ज़े ज़िन्दगी किस क़दर ख़ूब था कि कहीं जानवरों के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आते तो कहीं बीमारों की तीमार दारी किया करते, कहीं मोह़ताजों और परेशान ह़ालों की दस्त गीरी फ़रमाते तो कहीं नाबीनाओं और उ़म्र रसीदा लोगों की ख़ैर ख़्वाही और दिलजूई फ़रमाया करते, ग़रज़ येह ह़ज़रात मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने ज़ीशान خَیۡرُ النَّاسِ اَنۡفَعُھُمۡ لِلنَّاسِ या'नी बेहतरीन शख़्स वोह है जो

लोगों को फ़ाएदा पहुंचाए। (جامع صغیر ص ۲۴۶ حدیث ۴۰۴۴، دار الکتب العلمیۃ بیروت) की अ़मली तस्वीर हुवा करते थे, लिहाज़ा हमें भी अपने मुसल्मान भाइयों के साथ ख़ैर ख़्वाही व दिलजूई से पेश आना चाहिये।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ख़ैर ख़्वाही और दिलजूई के मुतअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाते हैं : मुसल्मानों की दिलजूई की अहम्मिय्यत बहुत ज़ियादा है। चुनान्चे ह़दीसे पाक में है : फ़राइज़ के बा'द सब आ'माल में **अल्लाह** को ज़ियादा प्यारा मुसल्मान का दिल ख़ुश करना है। (معجم کبیر ج ۱۱ ص ۵۹ حدیث ۱۱۰۷۹، دار احیاء التراث العربی بیروت) वाक़ेई अगर इस गए गुज़रे दौर में हम सब एक दूसरे की ग़म ख़्वारी व ग़म गुसारी में लग जाएं तो आनन फ़ानन दुन्या का नक़्शा ही बदल कर रह जाए। लेकिन आह! अब तो भाई भाई के साथ टकरा रहा है, आज मुसल्मान की इ़ज़्ज़तो आबरू और उस के जानो माल मुसल्मान ही के हाथों पामाल होते नज़र आ रहे हैं। **अल्लाह** पाक हमें नफ़रतें मिटाने और मह़ब्बतें बढ़ाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 1244, मक्तबतुल मदीना)

मुसल्मां मुसल्मान के ख़ूं का प्यासा हुवा वक़्त आया अजब या इलाही
सभी एक हो जाएं ईमान वाले पए शाहे आ़ली नसब या इलाही

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मुझे मेरा ऐ़ब बताओ

एक दिन ह़ज़रते सय्यिद अह़मद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बत़ौरे आ़जिज़ी अपने मुरीदों से फ़रमाया : तुम लोगों ने मेरे अन्दर कोई ख़ामी देखी हो तो मुझे बता दो, एक मुरीद ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : या

सय्यिदी ! आप में एक बहुत बड़ा ऐब है, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने पूछा : ऐ मेरे भाई ! कौन सा ऐब ? उस ने (भी आ़जिज़ी पर मब्नी जवाब देते हुए) अ़र्ज़ की : हमारे जैसे (बुरे लोगों) को अपनी सोह़बत से नवाज़े रखना। येह सुन कर सब मुरीद रोने लगे साथ ही साथ आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की आंखें भी अश्कबार हो गईं और फ़रमाने लगे : मैं तुम्हारा ख़ादिम हूं, मैं तुम सब लोगों से कमतर हूं। (طبقاتِ کبریٰ للشعرانی جزء ۱ ص ۲۰۱)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने इमाम अह़मद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه विलायत के अ़ज़ीम मर्तबे पर फ़ाइज़ होने के बा वुजूद किस क़दर आ़जिज़ी व इन्किसारी फ़रमाते। यक़ीनन आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की सीरते मुबारका में हमारे लिये बे शुमार मदनी फूल हैं। मगर येह भी याद रखिये कि आ़जिज़ी सिर्फ़ **अल्लाह** पाक की रिज़ा की ख़ातिर होनी चाहिये क्यूं कि येही आ़जिज़ी अ़ज़ीम सवाब और तरक़्क़िये दरजात का बाइ़स बन सकती है अगर कोई शख़्स रियाकारी के लिये आ़जिज़ी करता है तो ऐसी आ़जिज़ी वबाले जान भी बन सकती है। अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه झूटी आ़जिज़ी से बचने की तरग़ीब देते हुए मदनी इन्आ़म नम्बर 42 में फ़रमाते हैं : आज आप ने आ़जिज़ी के ऐसे अल्फ़ाज़ जिन की ताईद दिल न करे बोल कर निफ़ाक़ और रियाकारी का इरतिकाब तो नहीं किया ? मसलन इस त़रह़ कहना कि मैं ह़क़ीर हूं, कमीना हूं वग़ैरा जब कि दिल में ख़ुद को ह़क़ीर न समझता हो।

फ़रमाने ग़ौसे आ'ज़म पर गरदन झुका ली

बह्जतुल असरार में है कि क़ुत़्बे रब्बानी, शहबाज़े ला मकानी, मुह़्युद्दीन ह़ज़रत सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने जिस वक़्त قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ كُلِّ وَلِیِّ اللّٰهِ (मेरा येह क़दम हर वली की गरदन पर है) फ़रमाया

तो ह़ज़रते सय्यिद अह़मद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपनी गरदन झुका कर अ़र्ज़ की : عَلٰى رَقَبَتِیْ (मेरी गरदन पर भी आप का क़दम है) ह़ाज़िरीन ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप येह क्या फ़रमा रहे हैं ? तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : इस वक़्त बग़दाद में ह़ज़रत शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰى رَقَبَةِ كُلِّ وَلِیِّ اللهِ का ए'लान फ़रमाया है और मैं ने गरदन झुका कर ता'मीले इर्शाद की है। (بهجة الاسرار، ص ۳۳، ملخصاً)

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 28, सफ़ह़ा 388 पर ह़ज़रते ख़िज़्र मौसिली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का वाकिआ़ नक़्ल करते हैं : वोह फ़रमाते है कि एक रोज़ मैं ह़ज़रत सरकारे ग़ौसिय्यत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के हुज़ूर ह़ाज़िर था मेरे दिल में ख़त़रा आया कि शैख़ अह़मद रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ज़ियारत करूं, हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या शैख़ अह़मद को देखना चाहते हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : हां, हुज़ूर (ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) ने थोड़ी देर सरे मुबारक झुकाया फिर मुझ से फ़रमाया : ऐ ख़िज़्र ! लो येह हैं शैख़ अह़मद। अब जो मैं ने देखा तो अपने आप को ह़ज़रत अह़मद रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पहलू में पाया और मैं ने उन को देखा कि रो'बदार शख़्स हैं मैं खड़ा हुवा और उन्हें सलाम किया, इस पर ह़ज़रत रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : ऐ ख़िज़्र ! वोह जो शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर को देखे जो तमाम औलिया के सरदार हैं वोह मेरे देखने की तमन्ना (क्यूं करता है ?) मैं तो इन्हीं की रइ़य्यत (या'नी मा तह़तों) में से हूं, येह फ़रमा कर मेरी नज़र से ग़ाइब हो गए फिर हुज़ूर सरकारे ग़ौसिय्यत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के विसाले अक़्दस के बा'द बग़दाद शरीफ़ से ह़ज़रत सय्यिद अह़मद रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ज़ियारत को उम्मे उ़बैदा गया उन्हें देखा तो वोही शैख़ थे जिन को मैं ने उस दिन ह़ज़रत शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पहलू में देखा था। इस

वक़्त के देखने ने कोई और ज़ियादा उन की शनाख़्त मुझे न दी। ह़ज़रत अह़मद कबीर रफ़ाई رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ ने फ़रमाया : ऐ ख़िज़्र ! क्या पहली (ज़ियारत) तुम्हें काफ़ी न थी ?

इमाम रफ़ाई और औलियाए उम्मत

इमाम रफ़ाई رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ की अ़ज़मतो रिफ़्अ़त और क़द्रो मन्ज़िलत के बयान में बहुत बड़े बड़े औलिया और बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہِم के मल्फ़ूज़ात मिलते हैं आइये उन में से तीन हस्तियों के मल्फ़ूज़ात पढ़िये। (1) किसी ने हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ की बारगाह में इमाम रफ़ाई رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो इर्शाद फ़रमाया : उन का अख़्लाक़ सर ता पा शरीअ़त और क़ुरआनो सुन्नत के ऐ़न मुत़ाबिक़ है और उन का दिल **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** के साथ मश्ग़ूल है। उन्हों ने सब कुछ छोड़ कर सब कुछ पा लिया (या'नी रिज़ाए इलाही की ख़ातिर काएनात को छोड़ा तो रब को पा लिया और जब रब मिल गया तो सब कुछ मिल गया)। (सीरते सुल्त़ानुल औलिया, स. 200, मुलख़्ख़सन)

(2) वलिय्ये कबीर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम हवाज़िनी رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं सय्यिद अह़मद कबीर رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ की क्या ता'रीफ़ कर सकता हूं। उन के जिस्म का हर बाल एक आंख बन चुका है जिस के ज़रीए़ वोह दाएं बाएं, मशरिक़ व मग़रिब हर सम्त में देखते हैं।

(सीरते सुल्त़ानुल औलिया, स. 200, मुलख़्ख़सन)

(3) आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ फ़रमाते हैं : आप का शुमार अक़्त़ाबे अर्बआ़ से है या'नी उन चहार में जो तमाम अक़्ताब में आ'ला व मुमताज़ गिने जाते हैं। अव्वल हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ, दुवुम सय्यिद अह़मद रफ़ाई, सिवुम ह़ज़रत सय्यिद अह़मद कबीर बदवी, चहारुम ह़ज़रत सय्यिद इब्राहीम दुसूक़ी رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہِم।

दुन्या में जन्नती महल की ज़मानत

एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद कबीर रफ़ाई رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ अपने मुरीदे ख़ास ह़ज़रते सय्यिदुना जमालुद्दीन رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की ख़्वाहिश पर उन के लिये एक बाग़ की ख़रीदारी के लिये गए तो बाग़ के मालिक शैख़ इस्माईल ने कहा कि अगर इस बाग़ के बदले मुझे मेरी मुंह मांगी चीज़ न मिली तो मैं हरगिज़ न बेचूंगा, आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : ऐ इस्माईल ! मुझे बताओ इस की क्या क़ीमत चाहते हो ? उस ने कहा : या सय्यिदी ! मैं जन्नती महल के बदले ही येह बाग़ आप को दे सकता हूं, आप ने फ़रमाया : मैं भला कौन होता हूं जो मुझ से जन्नती महल मांग रहे हो ? मुझ से दुन्या की जो चीज़ चाहो मांग लो । उस ने कहा : मुझे दुन्या की कोई चीज़ नहीं चाहिये । आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने अपना सर झुकाया चेहरे की रंगत तब्दील हो कर पीली पड़ गई थोड़ी देर बा'द सर उठाया तो पीलाहट सुर्ख़ी में तब्दील हो गई । फिर फ़रमाया : इस्माईल ! जो तुम ने मांगा था मैं ने उस के बदले येह बाग़ ख़रीद लिया है । उस ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! येह बात मुझे लिख कर अ़ता फ़रमा दें । आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने एक काग़ज़ पर بِسۡمِ اللّٰہ शरीफ़ लिखने के बा'द येह इबारत तह़रीर फ़रमा दी : येह वोह महल है जिसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल मुन्इम ने फ़क़ीर ह़क़ीर बन्दे अह़मद बिन अबू ह़सन रफ़ाई से ख़रीदा है जिस के ज़ामिन ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ हैं, इस का ह़ुदूदे अर्बआ़ (या'नी बाउंड्री) येह है कि एक त़रफ़ जन्नते अ़दन है तो दूसरी त़रफ़ जन्नते मावा है, तीसरी जानिब जन्नते ख़ुल्द और चौथी जानिब जन्नते फ़िरदौस है, वहां की सब ह़ूरें व ग़िल्मान, क़ालीन, साज़ो सामान, नहरें और सब दरख़्त इस सौदे में शामिल हैं येह महल इस्माईल के दुन्यावी बाग़ के बदले में है, **अल्लाह** पाक इस बात का शाहिद व कफ़ील है ।

फिर आप ने वोह काग़ज़ तह कर के शैख़ इस्माईल के ह़वाले कर दिया। वोह तह़रीर ले कर अपने बच्चों के पास आए और फ़रमाया : मैं येह बाग़ सय्यिदी अह़मद को बेच चुका हूं, बच्चों ने कहा : आप ने क्यूं बेच दिया ह़ालां कि हमें तो इस की ज़रूरत थी ? तो उन्हों ने जन्नती मह़ल मिलने का वाक़िआ़ सुनाया : बच्चों ने कहा : हम उस वक़्त राज़ी होंगे जब उस मह़ल में हमारी भी शिर्कत हो, फ़रमाया : वोह हम सब का बाग़ है। इस के बा'द वोह बाग़ ह़ज़रते सय्यिदुना जमालुद्दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के ह़वाले कर दिया। कुछ मुद्दत के बा'द शैख़ इस्माईल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल हो गया। चूंकि उन्हों ने ज़िन्दगी ही में अपने बेटों को येह वसिय्यत कर रखी थी कि येह तह़रीर मेरे कफ़न में रख देना, लिहाज़ा अगले दिन सुब्ह़ उन की क़ब्र पर लिखा हुवा पाया ''قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا'' (या'नी हमें तो मिल गया जो सच्चा वा'दा हम से हमारे रब ने किया था)।

(جامع کرامات الاولیاء ج ۱ ص ۴۹۲، ملخصاً)

बहरे भी कलाम सुन लेते

ह़ज़रत सय्यिद अह़मद कबीर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की आ़दते मुबारका थी कि बैठ कर बयान फ़रमाया करते, आप की आवाज़ दूर वाले भी इसी त़रह़ ब आसानी सुन लेते थे जिस त़रह़ क़रीब वाले सुनते, ह़त्ता कि आस पास की बस्ती वाले अपनी छतों पर बैठ कर आप का बयान सुनते और उन्हें एक एक लफ़्ज़ साफ़ सुनाई देता था, जब बहरे आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते तो **अल्लाह** पाक आप की गुफ़्तगू सुनने के लिये उन के कान खोल देता और मशाइख़े त़रीक़त ह़ाज़िर होते तो दौराने बयान अपने दामन फैलाए रखते जब इमाम रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बयान से फ़ारिग़ होते तो येह ह़ज़रात अपना दामन सीने से लगा लेते और वापस आ कर अपने मुरीदों के सामने हर बात बयान कर देते। (طبقاتِ کبریٰ للشعرانی جزء ا ص ۱۹۹)

जहन्नम से आज़ादी का परवाना

एक मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के दो मुरीद इ़बादतो रियाज़त के लिये सह़रा में मौजूद थे। उन में से एक ने तमन्ना की, कि काश ! हम पर जहन्नम से आज़ादी का परवाना नाज़िल हो जाए, इतने में आस्मान से एक सफ़ेद काग़ज़ गिरा, उन्हों ने उसे उठा कर देखा तो ब ज़ाहिर कोई इ़बारत तह़रीर न थी, वोह दोनों उस काग़ज़ को पीरो मुर्शिद के पास ले गए मगर वाक़िए़ का पसे मन्ज़र न बताया, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उस काग़ज़ को देखा तो सज्दे में गिर गए, फिर सर उठा कर फ़रमाया : **अल्लाह** पाक का शुक्र है कि उस ने मेरे मुरीदों की जहन्नम से आज़ादी का परवाना दुन्या ही में मुझे दिखा दिया, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से अ़र्ज़ की गई : हुज़ूर ! येह तो कोरा काग़ज़ है, फ़रमाया : दस्ते क़ुदरत सियाही वग़ैरा का मोह़ताज नहीं येह काग़ज़ नूर से लिखा हुवा है।

(جامع کرامات الاولیاء ج ا ص ۴۹۳)

मल्फ़ूज़ाते अह़मद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

(1) जो अपने ऊपर ग़ैर ज़रूरी बातों को लाज़िम करता है वोह ज़रूरी बातों को भी ज़ाएअ़ कर देता है।

(2) जो शख़्स येह ख़याल करे कि उस के आ'माल उसे रब्बे पाक तक पहुंचा देंगे तो उस ने अपना रास्ता खो दिया। (अपने आ'माल के बजाए रह़मते इलाही पर नज़र करे।)

(3) **अल्लाह** पाक ग़ौस व क़ुत़्ब को ग़ैबों पर मुत्त़लअ़ फ़रमा देता है पस जो भी दरख़्त उगता है और पत्ता सर सब्ज़ होता है तो वोह सब जान लेते हैं।

(4) जो **अल्लाह** पाक पर तवक्कुल करता है **अल्लाह** पाक उस के दिल में ह़िक्मत दाख़िल फ़रमाता है और हर मुश्किल घड़ी में उसे काफ़ी हो जाता है।

(5) कितने ही ख़ुश होने वाले ऐसे हैं कि उन की ख़ुशी उन के लिये

मुसीबत बन जाती है और कितने ही ग़मगीन ऐसे हैं कि उन का ग़म उन के लिये बाइसे नजात बन जाता है।

(6) अफ़्सोस है ऐसे शख़्स पर जो दुन्या मिल जाने पर उस में मश्ग़ूल हो जाता है और छिन जाने पर ह़सरत करता है।

(7) **अल्लाह** पाक से मह़ब्बत की अ़लामत येह है कि **औलियाउल्लाह** رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم के इलावा तमाम मख़्लूक़ से वह़्शत हो क्यूं कि औलिया से मह़ब्बत **अल्लाह** पाक से मह़ब्बत है।

आप की औलाद

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه कसीरुल इयाल बुज़ुर्ग थे, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के 12 साह़िब ज़ादे और 2 साह़िब ज़ादिया थीं, उन में से चार साह़िब ज़ादों से आप का सिलसिलए नसब आगे चला। (शाने रफ़ाई, स. 36)

ज़िन्दगी के आख़िरी अय्याम

आप के ख़ादिमे ख़ास ह़ज़रते या'क़ूब رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : विसाल से पहले सय्यिदी अह़मद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मरज़े इस्हाल (पेट के मरज़) में मुब्तला हुए, एक माह तक इसी तक्लीफ़ में मुब्तला रहे और 20 दिन तक न कुछ खाया न पिया, नीज़ ज़िन्दगी के आख़िरी लम्ह़ात में आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه पर निहायत रिक़्क़त त़ारी थी अपना चेहरा और दाढ़ी मुबारक मिट्टी पर रगड़ते और रोते रहते, लबों पर येह दुआ़एं जारी थीं "**या अल्लाह !** अ़फ़्वो दर गुज़र फ़रमा, **या अल्लाह** मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे, **या अल्लाह** मुझे इस मख़्लूक़ पर आने वाली मुसीबतों के लिये छत बना दे।" (طبقاتِ کبریٰ للشعرانی جزء ۱ص ۲۰۲، بتغیر)

बिल आख़िर 66 साल इस दुन्या में रह कर मख़्लूक़े ख़ुदा की रुश्दो हिदायत का काम सर अन्जाम देने के बा'द बरोज़ जुमे'रात 22

जुमादल ऊला 578 हि. ब मुताबिक़ 13 सितम्बर 1182 ई. ब वक़्ते ज़ोहर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इस दुन्या से आख़िरत का सफ़र इख़्तियार किया, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ज़बाने मुबारक से अदा होने वाले आख़िरी कलिमात येह थे :

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

बा'दे विसाल ह़ाजत रवाई

ह़ज़रते शैख़ उ़मर फ़ारूसी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे कई मर्तबा इमाम रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िरी की सआ़दत नसीब हुई, एक मर्तबा तो ऐसा भी हुवा कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने क़ब्रे मुबारक से ब आवाज़े बुलन्द मेरी एक ह़ाजत के बारे में फ़रमाया : जा ! तेरी ह़ाजत पूरी कर दी गई। (جامع کرامات الاولیاء ج ۱ ص ۴۹۱)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	मिस्कीनों और बेवाओं की दादरसी	8
सात औलियाए किराम की सात ख़ुश ख़बरियां	1	मुझे मेरा ऐ़ब बताओ	9
दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ख़ुश ख़बरी	2	फ़रमाने ग़ौसे आ'ज़म पर गरदन झुका ली	10
मामूंजान के ज़ेरे तरबियत	3	इमाम रफ़ाई और औलियाए उम्मत	12
सज्जादा नशीनी का वाक़िआ़	4	दुन्या में जन्नती मह़ल की ज़मानत	13
नवाफ़िल की कसरत	4	बहरे भी कलाम सुन लेते	14
मख़्लूक़े ख़ुदा पर शफ़्क़त	5	जहन्नम से आज़ादी का परवाना	15
कुत्ते पर रह़्म	5	मल्फ़ूज़ात	15
कोढ़ियों और अपाहजों की ख़िदमत	6	आप की औलाद	16
बच्चों पर शफ़्क़त	7	ज़िन्दगी के आख़िरी अय्याम	16
उ़म्र रसीदा लोगों पर शफ़्क़त	7	बा'दे विसाल ह़ाजत रवाई	17

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

गुफ़्तगू लिख कर मुह़ासबा करने वाले ताबेई बुज़ुर्ग

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बीस साल तक दुन्यावी बात ज़बान से नहीं की, जब सुब्ह़ होती तो क़लम दवात और काग़ज़ ले लेते और दिन भर जो बोलते उसे लिख लेते और शाम को (उस लिखे हुए के मुत़ाबिक़) अपना मुह़ासबा फ़रमाते। (احیاء العلوم، ج ۳، ص ۱۲۸)

978-969-722-139-4
01082101

فیضانِ مدینہ محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net